।। ओउम् ।।

।। शिवभक्त महापुराण ।।

भोग और मोक्ष प्रदाता...

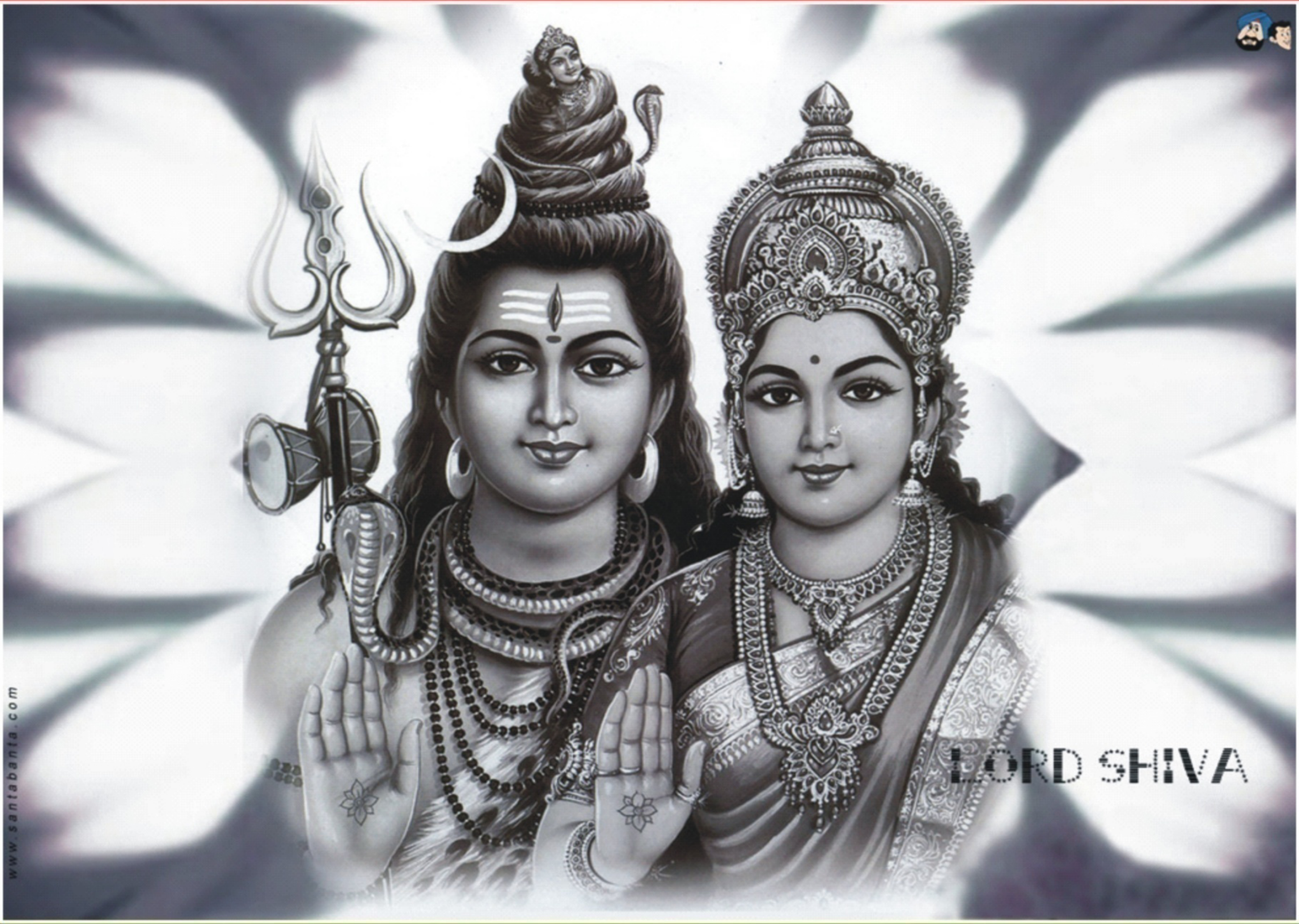

रचयिता : श्री संतोष कुमार गुप्ता

पुत्र : श्रीमती ज्ञान देवी एवं श्री केदार नाथ

शिवभक्त न्यास, काशी खण्ड- चुनार, भारत

Call : 09580-321-500 ; E - mail : shivbhaktt@gmail.com

॥ शिवभक्त महापुराण ॥

भोग और मोक्ष प्रदाता ...

॥ परम पिता परमेश्वर ॥

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ अर्द्धनारीश्वर रूप में पिता शिव और माँ शिवा ॥

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ शिवभक्त महापुराण- भोग और मोक्ष प्रदाता ... ॥

परमात्मा एक है। परमात्मा के करोड़ों हाथ, करोड़ों आँखें है। परमात्मा करोड़ों सूर्यो के समान है। परमात्मा स्वंय पृथ्वी पर नहीं आता, वह अपने संदेश दूत , भगवान , फरिश्ते , वेद , गुरू , धर्मग्रन्थ (शिवभक्त महापुराण) आदि के जरिये हम तक भेजता है। शिव , राम , नबी सल्ल, ईसा मसीह , गुरूनानक , आदिनाथ , महात्मा बुद्ध ये सभी परमात्मा नहीं है बल्कि ये परमात्मा के संदेशवाहक है।

'ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्र रसूलल्लाह'

जर्रे -जर्रे में मौजूद ऐ खुदा तेरे सिवाय कोई पूजने योग्य नहीं है, मुहम्मद साहब परमात्मा के संदेशवाहक है।

शिव , राम , नबी सल्ल, ईसा मसीह, गुरूनानक , आदिनाथ , महात्मा बुद्ध ये सभी अपनी पूजा करने के लिए नहीं बल्कि परमात्मा की ओर जाने के लिए कहते है। ये परमात्मा और मनुष्य के बीच मध्यस्थ है बिना इनके हम परमात्मा का दर्शन नहीं कर सकते। परमात्मतत्व का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। लेकिन एक ईश्वर को पकड़कर कठिन तप द्वारा एक परमात्मा को देखा जा सकता है।

प्रलय का कार्य भगवान शिव का है। प्रलय आने का समय 21 दिसम्बर 2012 था। प्रलय के एक दिन पहले अर्थात् 20 दिसम्बर 2012 को भगवान शिव जी के तरफ से एक नाम आया , वह नाम है ''शिवभक्त महापुराण ''।

''शिवभक्त महापुराण '' भगवान शिव जी की वाणी है। भगवान शिव के संदेश ''शिवभक्त महापुराण '' पुस्तक में निहित है। जिस प्रकार शिव जी के 16 सोमवार , 16 उपचार, 16 श्रृंगार होते है उसी प्रकार ''शिवभक्त महापुराण '' के 16 अध्याय है। महाशिवरात्रि 10 मार्च 2013 को प्रथम अध्याय पूर्ण हुआ। जिसका प्रथम संस्करण भक्तजनों के बीच है। आगे क्रम जारी है...

''शिवभक्त महापुराण '' सिर्फ एक धर्मग्रन्थ ही नहीं बल्कि सभी धर्मो, सभी जातियों, सभी वर्गो के लोगों के उत्थान और कल्याण का एक माध्यम है।''शिवभक्त महापुराण '' परमपिता परमेश्वर को पाने का एक सच्चा रास्ता है। परमात्मा मंदिरों,मस्जिदों में नहीं रहता वह तो हमारे दिल में रहता है।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृदेशेऽर्जुन तिष्ठति।

|| SHIVBHAKTT MAHAPURAN ||

'शिव ' का अर्थ कल्याण है।''शिवभक्त'' का अर्थ भक्तों का कल्याण है। ''शिवभक्त'' शिव और भक्त का मिलन है। जब शिव और भक्त का मिलन हो जाता है तब वह परमात्मा को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ता है...

कण - कण, पात -पात को रचता और उसी में बसता।

कहे ''शिवभक्त'' तेरी जुबां को अमृतरस छलकता॥

''शिवभक्त महापुराण - भोग और मोक्ष प्रदाता ...'' धर्मग्रन्थ में लिखे संदेश अमृतरस है जो भोग और मोक्ष दिलाने का एक सत्य मार्ग है।

हम परमात्मा की पूजा क्यों करते है ?

क्योंकि हम परमात्मा/खुदा से बेइंतहा प्रेम करते है। जिससे प्रेम किया जाता है उसके आगे तो शीश झुक ही जाता है उसकी बंदिगी तो हो ही जाती है। ''शिवभक्त'' शिव और भक्त की प्रेम कहानी है...

न रसूल , न फरिश्ते , न भगवान हैं हम।

न गुरु , न ईश्वर , एक इंसान हैं हम॥

भक्त और भगवान को जोड़ना पैगाम हमारा।

भक्ति मेरा कर्म , शिवभक्त संतोष कुमार नाम हमारा॥

रचयिता - ॥ शिवभक्त महापुराण् ॥

संतोष कुमार गुप्ता

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ शिवभक्त महापुराण ॥

भोग और मोक्ष प्रदाता ...

॥ अनुक्रमणिका ॥

विषय पृष्ठ सं.

॥ अध्याय - प्रथम ॥

1. शिवपंचाक्षरस्तोत्रम्	7
2. गुरु - वन्दना	8
3. अथ द्वादशज्योतिर्लिंगानि - श्री काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग	9
4. श्री शिवजी का ध्यान	9
5. शिवभक्त कुबेर	9
6. एक ईश्वर की आराधना	11
7. प्रणव के सूक्ष्म रूप 'ओम्' और स्थूल रूप 'ओम् नमःशिवाय' का माहात्मय	11
8. मंत्र	12
9. रुद्राक्षधारण की महिमा	13
10. शिवभक्त के लिए प्रतिज्ञा	14
11. नरक के द्वार	15
12. ईश्वर से मोह	16
13. आराधना	16
14. लिंग पूजन की विधि	17
15. शिव - वाणी	21
16. सत्यमेव जयते	21
17. सत्य वचन	22
18. जीवन अमूल्य है	22
19. आरती शिवजी की	24
20. प्रार्थना	25

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ शिवपंचाक्षरस्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।

मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥

य (क्ष) ज्ञस्वरुपाय जटाधाराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ।

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ इति॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

॥ गुरु - वन्दना ॥

जय सद्गुरुदेवं, परमानन्दं, अमर शरीरं अविकारी ॥

निर्गुण निर्मूलं, धरि स्थूलं, काटन शूलं भवभारी ॥

सूरत निज सोहं, कलिमल खोहं, जनमन मोहन छविभारी ॥

अमरापुर वासी, सब सुख राशी, सदा एकरस निर्विकारी ॥

अनुभव गम्भीरा, मति के धीरा, अलख फकीरा अवतारी ।

योगी अद्वैष्टा, त्रिकाल द्रष्टा, केवल पद आनन्दकारी ॥

चित्रकुटहिं आयो, अद्वैत लखायो, अनुसुइया आसन मारी ॥

श्री परमहंस स्वामी, अर्न्तयामी, हैं बड़नामी संसारी ॥

हंसन हितकारी, जग पगुधारी, गर्व प्रहारी उपकारी ॥

सत् - पंथ चलायो, भरम मिटायो, रूप लखायो करतारी ॥

यह शिष्य है तेरो, करत निहोरो, मोपर हेरो प्रणधारी ॥

जय सद्गुरु.............भारी ॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

॥ अथ द्वादशज्योतिर्लिंगानि – श्री काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग ॥

सौराष्ट्रे, सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमओंकारममलेश्वरम् ॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावने ॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुष्मेशं च शिवालये ॥

एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥

॥ श्री शिवजी का ध्यान ॥

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवम् शंकरम् ॥

॥ शिवभक्त कुबेर ॥

काम्पिलय नगर में यज्ञदत्त नाम से एक प्रसिद्ध ब्राह्मण रहते थे । वे बहुत सदाचारी थे । उनका एक गुणनिधि नाम से पुत्र हुआ । वह बड़ा ही दुराचारी और जुआरी था जिस कारण पिता ने अपने पुत्र गुणनिधि को घर से निकाल दिया । कई दिनों तक भूखा भटकते-भटकते एक दिन व शिव मंदिर में प्रसाद चुराने की इच्छा से पहुँचा वहाँ उसने अपने वस्त्र को जलाकर उजाला किया मानो शिव जी के लिए दीप जलाया गया हो । उसके बाद वह चोरी में पकड़ा गया और उसे प्राणदण्ड मिला । जब यमदूत उसे पकड़कर ले जा रहे थे तभी शिव

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

जी के पार्षद वहाँ आकर गुणनिधि को शिवलोक ले गये। शिवलोक में वह शिव-पार्वती की सेवा करके कालान्तर में कलिंग का राजा दम नाम से प्रसिद्ध हुआ।

राजा दम बड़ी प्रसन्नता के साथ सब ओर शिवधर्मो का प्रचार करने लगे। उन्होंने अपने राज्य में रहने वाले सभी लोगों को आज्ञा दे दी कि शिवालयों में दीप जलाना अनिवार्य है। इस पुण्य-कर्म के कारण जन्मान्तर में वे अलकापुरी के स्वामी हुए।

इस प्रकार भगवान शिव के लिए किया गया थोड़ा सा पूजन भी महान फल देता है, ऐसा जानकर उत्तम सुख की इच्छा रखने वाले लोगों को शिव का भजन अवश्य करना चाहिए।

पहले की बात है कि ब्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य से विश्रवा का जन्म हुआ और विश्रवा के पुत्र वैश्रवण (कुबेर) हुए। वैश्रवण अपने पूर्व जन्म में अलकापुरी के स्वामी हुए थे और जब वह समय बीत गया तो वह यज्ञदत्त का पुत्र जो दीपदान किया था कुबेर के रूप में महादेव जी की कठिन तपस्या करने लगा। उसने वर्षो तक तपस्या की। उसके बाद महादेव जी माँ पार्वती के साथ कुबेर के पास आये और वरदान माँगने को कहा।

यह वाणी सुनकर तपस्या के धनी कुबेर ने ज्योंही आँखे खोली त्यों ही शंकर जी सामने खड़े दिखाई दिये। वे उगते हुए हजारों सूर्यो से भी तेजस्वी थे, मस्तक पर चन्द्रमा सुशोभित हो रहे थे जिस कारण कुबेर जी की आँखे चौधियाँ गयी। कुबेर जी देवेश्वर शिव से बोले नाथ! मुझे वह दिव्य दृष्टि दें जिससे आपके चरणों का दर्शन हो सके। यही मेरे लिए सबसे बड़ा वरदान है।

फिर शिव जी ने उन्हें दिव्य दृष्टि दी। दृष्टिशक्ति मिल जाने पर कुबेर जी पार्वती जी की तरफ आँखे फाड़-फाड़कर देखने लगे और सोचने लगे कि मुझसे भी ज्यादा तप करने वाली यह सुन्दरी कौन है ? जो शिव के बायें भाग में खड़ी है। यह देखते-देखते पार्वती जी की कृपा से कुबेर जी की एक आँख फूट गयी।

उसके बाद देवी पार्वती ने शिव जी से कहा कि यह दुष्ट मेरी तरफ देखकर क्या-क्या बक रहा है ? तब शिव जी ने कहा-देवी यह तुम्हारा पुत्र है। यह तुम्हें क्रूर दृष्टि से नहीं देख रहा है बल्कि तुम्हारी तपस्या का वर्णन कर रहा है, फिर भोलेनाथ कुबेर जी से बोले,वत्स मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ। तुम्हें वर देता हूँ कि तुम निधियों के स्वामी, पुण्यजनों के पालक और सबके लिए धन के दाता बनों। मेरे साथ तुम्हारी मैत्री रहेगी और मैं तुम्हारे समीप निवास करूँगा।

इस प्रकार भगवान शिव ने पार्वती देवी से फिर कहा देवी यह आपका पुत्र है। इस पर अपनी कृपा करो।

देवी उमा प्रसन्न होकर यज्ञदत्त के पुत्र से बोली पुत्र भगवान शिव में तुम्हारी सदा निर्मल भक्ति बनी रहे। तुम्हारी बायीं आँख फूट गयी लेकिन एक नेत्र से युक्त रहो। भगवान शिव जी ने जो वर तुम्हें दिये वह सब उसी रूप में तुम्हें सुलभ हों। मेरे रूप के प्रति ईर्ष्या करने के कारण तुम (कुबेर) नाम से प्रसिद्ध होओगे। इस तरह कुबेर ने भगवान शंकर की मैत्री प्राप्त की और अलकापुरी के पास जो कैलाश पर्वत है, वह भगवान शिव का निवास हो गया।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

॥ एक ईश्वर की आराधना ॥

सारी दुनिया का एक मत है कि परमात्मा एक है। ईश्वर एक है। इष्ट एक है। जब व्यक्ति ध्यान योग में पहुँचता है, तब उसे एक परमात्मा या एक ईश्वर का निर्देष मिलता है। वह हृदय के अंदर अपने भगवान को अपने आत्मा को खोज लेता है। ध्यान योग आराधना का अंतिम चरण है। इसके बाद कोई अंतिम चरण नही रह जाता। लेकिन जो अभी ध्यान योग तक नहीं पहुँचे है। वह वाह्य या बाहरी पूजा करते हैं। बाहरी पूजा में कई भगवान की पूजा करते है। कोई शिव की तो कोई हनुमान की, विष्णु की, ब्रह्मा की, रूद्र की, ग्राम देवी की, घर के देवता की, अन्य की पूजा करते हैं। कोई सभी भगवान की पूजा करता हैं। आराधना किसी एक का करें चाहें तो विष्णु जी को ही लें ले या चाहे तो हनुमान जी को ही लें ले या गौरी माता को ही लें ले। किसी एक हो ही परमात्मा का स्वरूप मानकर आराधना करें।

क्योंकि ये सभी परमात्मा के पुत्र है। परमात्मा किसी भी रूप में हमारे पास आ सकता है, शिव रूप में, विष्णु रूप में, ईसा मसीह रूप में, मुहम्मद साहब के रूप में, गुरू नानक के रूप में या राम के रूप में।

ये परमात्मा और मनुष्य के बीच मध्यस्थ है बिना इनके हम परमात्मा का दर्शन नहीं कर सकते। जिस प्रकार पेड़ के एक पत्ते को पकड़कर, फिर उसकी टहनी को, फिर शाखा को, फिर जड़ को पकड़ा जा सकता है। ठीक उसी प्रकार किसी एक ईश्वर को पकड़कर एक परमात्मा को देखा जा सकता है।

इसलिए किसी एक ईश्वर जैसे शिव जी को पकड़कर परमात्मा को पकड़े। क्योंकि शिव जी तो देवों के देव महादेव है।

॥ प्रणव के सूक्ष्म रूप 'ओम्' और स्थूल रूप 'ओम् नमःशिवाय' का माहात्मय ॥

भगवान शिव कहते हैं कि

प्रणव- प्र + नव

प्र - प्रकृति से उत्पन्न संसाररूपी महासागर

नव - नाव

अर्थात् प्रणव का अर्थ है कि प्रकृति से उत्पन्न संसाररूपी महासागर को पार करने वाली नाव। इसलिए इस ओंकार को प्रणव कहा जाता है।

ओमकार अपने जप करने वाले साधकों से कहता है-

प्र - प्रपंच

न -नहीं है

वः - तुमलोगों के लिए।

अतः इस भाव को लेकर भी ज्ञानी पुरूष ओम् को प्रणव नाम से जानते हैं।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

अर्थात् यह तुम सब उपासकों को बलपूर्वक मोक्ष तक पहुँचा देगा।

प्रणव के दो भेद बताये गये हैं - स्थूल और सूक्ष्म। एक अक्षररूप (ओम्) हैं उसे सूक्ष्म प्रणव जानना चाहिए। और (नमः शिवाय) इस पाँच अक्षर वाले मंत्र को स्थूल प्रणव समझना चाहिए।

जो अपने समस्त पापों का क्षय करना चाहते हैं, उनके लिए (ओम्) प्रणव का जप अत्यन्त आवश्यक है।

सदा प्रणव का जप और प्रणवरूपी शिव का ध्यान करते-करते समाधि में स्थित हुआ महायोगी पुरूष साक्षात् शिव ही है, इसमें संशय नहीं है।

द्विजो ! अब मैं जप का वर्णन करता हूँ। तपस्या करने वाले के लिए जप का उपदेश किया गया है, क्योंकि वह जप करते - करते अपने आपकों शुद्ध कर लेता हैं ''नमः शिवाय'' मंत्र को शिव पंचाक्षर मंत्र कहा जाता हैं यह स्थूल प्रणवरूप है। इस पंचाक्षर के जप से ही मनुष्य सम्पूर्ण सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है। इस मंत्र के शुरू में '' ओम्'' लगाकर ही सदा उसका जप करना चाहिए।

अर्थात् '' ओम् नमः शिवाय'' का जप करना चाहिए।

साधक को चाहिए कि व मंत्र जप करने के बाद भगवान शिव की प्रसन्नता के लिए महाभिषेक एवं प्रसाद निवेदन करके शिवभक्तों का पूजन करें। भक्त की पूजा से भगवान बहुत प्रसन्न होते है। शिव और उनके भक्त में कोई अन्तर नहीं है। शिवभक्त एक है। वह साक्षात् शिव का स्वरूप ही है। शिव स्वरूप मंत्र को धारण करके वह शिव ही हो गया है। अतः उसकी सेवामें आगे रहना चाहिए। जो जितना-जितना शिवमंत्र का जप कर लेता है वह उतना ही शिव के नजदीक पहुँचता जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है। शिवभक्त स्त्री का रूप पार्वती जी का स्वरूप है वह जितना ही मंत्र जपती है वह उतना ही देवी के करीब होती जाती है।

शिवलिंग को शिव और पार्वती मानकर शिव के मंत्र से जो सोलह उपचारों द्वारा उनकी पूजा करता है। उस पर शिव जी बड़े प्रसन्न होते हैं शिवभक्तों को भोजन अवश्य कराये। ऐसे शिवभक्तों को इस पृथ्वी पर दुबारा जन्म नहीं लेना पड़ता।

॥ मंत्र ॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

॥ रुद्राक्षधारण की महिमा ॥

रुद्राक्ष शिव को बहुत ही प्रिय है। इसे परम पावन समझना चाहिए। रुद्राक्ष के दर्शन से, स्पर्श से तथा उस पर जप करने से वह समस्त पापों का अपहरण करने वाला माना गया है। पूर्वकाल में परमात्मा शिव ने समस्त लोकों का उपकार करने के लिए देवी पार्वती के सामने रुद्राक्ष की महिमा का वर्णन किया था।

भगवान शिव बोले-शिवे! मैं तुम्हारे प्रेमवश भक्तों के हित की कामना से रुद्राक्ष की महिमा का वर्णन करता हूँ।

पूर्वकाल में मैं मन को संयम में रखकर हजारों वर्षों तक तपस्या में लगा रहा। एक दिन अचानक मेरा मन क्षुब्ध हो गया। मै समस्त लोकों का उपकार करने वाला परमेश्वर हूँ। अतः उस समय लीलावश ही मैंने अपने दोनों आँख खोले, खोलते ही मेरे आँखों से आँसू की कुछ बूँदे गिरी, उन बूँदो से वहाँ रुद्राक्ष नामक वृक्ष पैदा हो गया।

वे रुद्राक्ष मैंने विष्णु जी तथा सभी वर्णों के लोगों को बाँट दिए। पृथ्वी पर अपने प्रिय रुद्राक्ष को मैंने मथुरा, अयोध्या, लंका, काशी तथा अन्य देशों में भी उनके अंकुर उगाये।

योग और मोक्ष की इच्छा रखने वाले सभी लोगों को रुद्राक्ष के फल अवश्य धारण करने चाहिए। इसे बताने का उद्देश्य है भक्तो की हितकामना।

रुद्राक्ष जैसे-जैसे छोटा होता है, वैसे ही वैसे अधिक फल देता हैं। संसार में जैसा फल रुद्राक्ष देता है, वैसा फल कोई माला व अन्य नहीं देती है। समान आकार वाले, चिकने, मजबूत, उभरे हुए, छोटे दानों वालें और सुन्दर रुद्राक्ष पहनने चाहिए। जिसे कीड़ो ने दूषित कर दिया है, जो टूटा-फूटा हो जिसमें उभरे हुए दाने न हो, जो वर्णयुक्त हो, जो पूरा-पूरा गोल न हो ऐसे रुद्राक्ष को त्याग देना चाहिए। ओम् नमः शिवाय मंत्र से ही सभी रुद्राक्ष को पहनना चाहिए।

रुद्राक्षधारी पुरूष अपने खान-पान में मदिरा, मांस, लहसुन, प्याज, सहिजन, लिसोड़ा को त्याग दें। क्योंकि इसे धारण करने का सौभाग्य बड़े पुण्य से प्राप्त होता है।

सभी आश्रमों, सभी वर्णो, स्त्रियों को भी भगवान शिव की आज्ञा के अनुसार सदैव रुद्राक्ष धारण करने चाहिए।

॥ सर्वाश्रमाणां वर्णानां स्त्रीशूद्राणां शिवाज्ञया। धार्याः सदैव रुद्राक्षा ॥

जहाँ रुद्राक्ष की पूजा होती है, वहाँ से लक्ष्मी दूर नहीं जाती है। उस स्थान के सारे उपद्रव नष्ट हो जाते है। लोगों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती है।

रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले मनुष्य को देखकर भूत, प्रेत आदि भाग जाते हैं। टोना-टोटका, नजर लगना आदि भी नष्ट हो जाते है। पार्वती ! रुद्राक्ष मालाधारी पुरुष को देखकर मैं शिव, विष्णु, दुर्गा, गणेश, सूर्य तथा अन्य देवता प्रसन्न हो जाते है। इस प्रकार धर्म की वृद्धि करने के लिए रुद्राक्ष अवश्य धारण करना चाहिए।

॥ शिवभक्त के लिए प्रतिज्ञा ॥

मनुष्य को अगर संसाररूपी विष से बाहर निकलना है तो ज्ञान और ध्यान के बिना कोई उपाय नहीं हैं जो सरल स्वभाव का बुद्धिमान, शान्त, सभी प्राणियों में समान भाव वाला, तीनों ऋणों से रहित, पूर्व जन्म में पुण्य करने वाला, श्रद्धा से गुरू की सेवा करने वाला, स्वर्ग लोक के भोग को भोगकर वह मनुष्य भारतवर्ष में जन्म लेकर परमात्मा को जानने वाला बनता है।

(लिंगपुराण पेज - 210)

अर्थात् स्वर्ग लोक के सुख को भोगकर तो भारतवर्ष में जन्म लिया है, अब कौन सा स्वर्ग लोक बचा ? जिसकी इच्छा करते है ?

कलियुग में रोग का भय, दुःख का भय तथा वर्षा न होने का भय रहेगा। मनुष्य झूठ अधिक बोलेंगे। भ्रूण हत्या तथा वीर हत्या होगी। राजा रक्षक नहीं रहेंगे। पृथ्वी राजा से शून्य हो जायेगी। शासन प्रजा की रक्षा नहीं कर सकेगा।

(लिंगपुराण पेज - 128)

शिवपुराण पेज 650 - 651 पर महावाक्य - 'अहं ब्रह्मास्मि' का अर्थ है वह शक्तिमान परमेश्वर मैं हूँ। 'योऽसौ सोऽहं हंसः सोऽमस्ति' का अर्थ है - जो वह है, वह मैं हूँ। मैं वह हूँ और वह मैं हूँ।

II SHIV BHAKTT MAHAPURAN II

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्द्वैव आसुर एव च।

दैवो विस्तरशः प्रोक्तः आसुरं पार्थ मे शृणु॥

(गीता 16/6)

हे अर्जुन! इस लोक में मनुष्य के स्वभाव दो प्रकार के होते है- देवों के जैसा और असुरों के जैसा। जब मनुष्य देवों जैसा कार्य करता है तब वह देवता, भगवान बन जाता है। जब वह असुरों जैसा कार्य करता है तब राक्षस, शैतान व असुर बन जाता है।

अतः यह शिवभक्त महापुराण पढने के लिए नहीं ,शिवभक्त बनने के लिए पढे और प्रतिज्ञा करें कि मैं ही परमात्मा हूँ, (नाम से नहीं) और परमात्मा के कार्यो को (काम से) करूँगा। किसी बहन का भाई बनूँगा, किसी माँ का पुत्र बनूँगा। अन्याय होते देख चुप नहीं रहूँगा। जरूरतमंद लोगो की मदद करूंगा। अपने हृदय के परमात्मा अर्थात् आत्मा को सोने न दूँगा। उसे जगाकर इस भारतवर्ष में कलियुग के समाप्त होने के पहले एक 'अच्छा युग' बनाऊँगा। फिर से धर्म को चार पैरों पर खड़ा करूँगा।

प्रत्येक माँ, बहन, भाई, पिता, गुरू को यह भरोसा दिलाना होगा कि हम यानि शिवभक्त उनके साथ है।

असुरक्षा, असहाय महसूस होने पर परमात्मा को याद करे न कि पाँच पाण्डव को। क्योंकि पांडव के होते हुए भी, राजा के होते हुए भी, प्रशासन के होते हुए भी श्रीकृष्ण जी को एक स्त्री की लज्जा बचाने के लिए आना पड़ा।

किसी माँ, बहन, पिता, असहाय की मदद कर आप स्वयं परमात्मा बने, जिनकी आप मदद करेंगे वे सिर्फ यही कहेंगे कि आज मेरा भगवान मेरे सामने खड़ा है।

॥ नरक के द्वार ॥

दूसरे की स्त्री को प्राप्त करने का संकल्प, दूसरे के धन को चुराने की इच्छा, मन के द्वारा अनिष्ट चिन्तन तथा न करने योग्य कर्म में प्रवृत्त होने का दुराग्रह - ये चार प्रकार के मन से होने वाले पाप हैं।

बेसिर - पैर की बातें करना, असत्य बोलना, अप्रिय बोलने और पीठ पीछे चुगली करना - ये चार प्रकार के वाणी से होने वाले पाप है।

अभक्ष्य - भक्षण, प्राणियों की हिंसा, व्यर्थ के कामों में लगना तथा दूसरों के धन को हड़प लेना - ये चार प्रकार के शरीर से होने वाले पाप हैं।

इस प्रकार ये 12 प्रकार के पाप जो मन, वाणी और शरीर से किये जाते हैं। ये 12 प्रकार के पाप - कर्म मनुष्य को नरक में गिरा देते है।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

अतः जो भी कर्म किया जाता है, वह सब के सब पाप ही है। पुण्य - कर्म सिर्फ एक ही है, अधिक से अधिक प्रभु का नाम लेना।

॥ ईश्वर से मोह ॥

नैवास्य भविता कश्चिन्नासौ भवति कस्यचित्। पथि संगम एवायं दारैः पुत्रैश्च बन्धुभिः ॥

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ। समेत्य च व्यपेयातां तद्वद् भूतसमागमः ॥

ये शरीर दुःखों के घर है। इनकी मृत्यु अनिवार्य होती हैं। भूतकाल में कितने ही शरीर नष्ट हो गये और भविष्य काल में कितने ही शरीर आने वाले है, वे सब आकर जब कमजोर हो जाते है, तब पुरूष उन्हें छोड़ देता है। कोई भी जीवित आत्मा अनन्त काल तक रहने का अवसर नहीं पाता। यहाँ स्त्रियों, पुत्रों, भाई - बहनों से जो मिलन होता है, वह पथिक को रास्ते में मिले हुए दूसरे पथिक के ही समान हैं जैसे महासागर में एक लकड़ी कहीं से और दूसरा लकड़ी कहीं से बहता आता है वे दोनों लकड़ी कहीं थोड़ी देर के लिए मिल जाते हैं और मिलकर फिर बिछुड़ जाते हैं। उसी प्रकार प्राणियों का यह साथ मिलना भी एक संयोग - वियोग है।

अतः कोई भी रिश्ते सिर्फ मोह हैं जो कुछ समय के लिए ही है, अनन्तकाल तक के लिए नहीं हैं। मोह ही भ्रम है। भ्रम से निकले और एक ईश्वर से मोह करें जो हमेशा आप के साथ है और अनन्तकाल तक आप के साथ ही रहेगा। ईश्वर से मोह करना भ्रम नहीं कहलाता, यही शाश्वत सत्य है।

॥ आराधना ॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

जीवन बड़ी तेजी से बीता जा रहा है, जवानी शीघ्रता से बीती जा रही है और रोग तीव्र गति से निकट आ रहा है, इसलिए सबको पिनाकपाणि महादेव जी की पूजा करनी चाहिए। जब तक मृत्यु नहीं आती है, जब तक बुढ़ापा नहीं आता और जब तक शरीर कमजोर नहीं हो जाता, तब तक ही भगवान शंकर की आराधना कर लो। भगवान शिव की आराधना के समान दूसरा कोई धर्म तीनों लोकों में नही हैं।

त्वरितं जीवितं याति त्वरितं याति यौवनम् ॥ त्वरितं व्याधिरभ्येति तस्मात्पूज्यः पिनाकधृक्।

यावन्नायाति मरणं यावन्नाक्रमते जरा। यावन्नेन्द्रियवैकल्यं तावत्पूजय शंकरम् ॥

न शिवार्चनतुल्योऽस्ति धर्मोऽन्यो भुवनत्रये ॥

॥ लिंग पूजन की विधि ॥

'' ओम् नमः शिवाय ''

मंत्र बोलते हुए समस्त पूजन - सामग्री पर जल छिड़कें।

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।

मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥

(यजु. 16/15)

इस मंत्र से प्रभु को पूजा में बुलायें।

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।

या नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥

(यजु. 16/2)

इस मंत्र से प्रभु को आसन दें।

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

इस मंत्र से प्रभु को अर्घ्य या जल दें।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥

(यजु. 3/60)

इस मंत्र से शिवजी को आचमन करायें।

पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।

पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

(यजु. 18/36)

इस मंत्र द्वारा दूध से स्नान करायें।

दधिक्राव्णों अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभि नो मुखा करत्प्रणआयूँषि तारिषत्॥

(यजु. 23/32)

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए दही से स्नान करायें।

घृतं घृतपावानः पिवत वसां वसापावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।

दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

(यजु. 6/11)

इस मंत्र से घी से स्नान करायें।

अपाँ्समुद्रयसँ्सूर्येसन्तँ्समाहितम्। अपायँ्रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाभ्युतममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वां जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

(यजु. 9/13)

इस मंत्र से शर्करा स्नान करायें। इन दूध, दही, घी, मधु और शर्करा को पंचामृत कहते हैं।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

फिर भगवान शिव को जल से स्नान करायें। स्नान के बाद उन्हें चन्दन से लेप करें। फिर जल से ही उनके ऊपर जलधारा गिराकर अभिषेक करें। इसके बाद शिवलिंग को अच्छी तरह कपड़े से पोछें और शिव के लिए वस्त्र समर्पित करें।

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।

(यजु. 16/28)

इस मंत्र से चन्दन व रोली चढ़ाये।

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुंजिश्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः।

(यजु. 16/27)

इस मंत्र से अक्षत या चावल दें।

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च।

(यजु. 18/42)

इस मंत्र से फूल चढ़ाये।

नमः पर्याय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च नम इशुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवाना हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो नम आनिर्हतेभ्यः।

(यजु. 16/46)

इस मंत्र से बिल्वपत्र समर्पण करें।

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च।

(यजु. 16/29)

इस मंत्र से धूप दिखायें।

नम आशवे चाजिराय च नमः शीम्याय् च नमः ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च नमो द्वीप्याय् च।

(यजु. 16/32)

इस मंत्र से दीप दिखाये या आरती करें। फिर अपने हाथ धो ले।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुधन्याय च।

(यजु. 16/32)

इस मंत्र से भगवान को भोग लगायें।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः।

यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥

(यजु. 16/48)

इस ऋचा से फल समर्पित करें।

नमो व्रज्याय च गोष्ठयाय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्याय च नमः काट्याय च गहव्रेष्ठाय च।

(यजु. 16/44)

इस ऋचा या मंत्र से प्रभु शिव को अपना सब कुछ समर्पित कर दें।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

(यजु. 13/4, 23/1, 25/10)

इस मंत्र से दक्षिणा चढ़ावें।

देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित।

मनसस्पत इमं देवयज्ञँ स्वाहा वाते धाः ॥

(यजु. 8/21)

इस मंत्र से भगवान शिव का विर्सजन कर दें।

इस प्रकार शिव पूजा की वैदिक विधि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमहि।

उग्राय उग्रनाशाय शर्वाय शशिमौलिने ॥

(यजु. 20/43)

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

इस मंत्र द्वारा शिवभक्त भगवान शिव की पूजा करे। वह भ्रम छोड़कर उत्तम भक्ति - भाव से शिव की आराधना करें। क्योंकि महादेव जी तो भक्ति से ही मनोवांछित फल देते हैं।

॥ शिव - वाणी ॥

1. शिवभक्त किसी से नहीं डरता, वह तो निडर रहता है।

2. वह कर्म जो पूजा की ओर जाये, वही कर्म है।

   वह मन जो पूजा की ओर जाये, वही मन है।

   वह शरीर जो पूजा की ओर जाये, वही शरीर है।

   ''पूजा ही कर्म है।''

3. किसी कार्य को शुरू करने से पहले गणेश जी का नाम अवश्य लें क्योंकि मैंने भी असुर तारकासुर के पुत्र तारकाक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष को मारने से पहले गणेश जी का पूजन किया।

4. मैं भी कर्म करता हूँ। तो, तू क्यों नहीं करेगा ?

   ओम् अथवा शिव अथवा राम का नाम मन ही मन जपते रहे।

5. मैं सब जगह हूँ। मेरी आँखे न होते हुए भी मैं सबको देखता हूँ। कान न होते हुए भी सब कुछ सुनता हूँ। मुख न होते हुए भी मैं बोल सकता हूँ।

॥ सत्यमेव जयते ॥

सत्य ही परब्रह्म है, सत्य ही परम तप है, सत्य ही श्रेष्ठ यज्ञ है और सत्य ही उत्कृष्ट शास्त्रज्ञान है। सोये हुए पुरूषों में सत्य ही जागता है, सत्य ही परमपद है, सत्य से ही पृथ्वी टिकी हुई है और सत्य में ही सब कुछ प्रतिष्ठित हैं। तप, यज्ञ, पुण्य, देवता, ऋषि और पितरों का पूजन, जल और विद्या ये सब सत्य पर ही प्रतिष्ठत है सबका आधार सत्य ही है। सत्य ही यज्ञ, तप, दान, मंत्र सरस्वती देवी तथा ब्रह्मचर्य है। ओंकार (ओम्) भी सत्यरूप ही है। सत्य से ही वायु चलती है, सत्य से ही सूर्य तपता है, सत्य से ही आग जलती है और सत्य से ही स्वर्ग टिका हुआ है। लोक में सम्पूर्ण वेदों का पालन तथा सम्पूर्ण तीर्थो का स्नान केवल सत्य से सुलभ हो जाता है। सत्य से सब कुछ प्राप्त होता है। इसमें संशय नहीं है। एक सहस्र अश्वमेध ओर लाखों यज्ञ एक ओर तराजू पर रखें जाएं और दूसरी ओर सत्य तो सत्य का ही पलड़ा भारी होगा। देवता, पितर, मनुष्य, नाग, राक्षस तथा चराचर प्राणियों सहित समस्त लोक सत्य से ही प्रसन्न होते है। सत्य को परम धर्म

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

कहा गया है। सत्य को ही परमपद बताया गया है और सत्य को ही परब्रह्म परमात्मा कहते है। इसलिए सदा सत्य बोलना चाहिए।

सत्यमेव परं ब्रह्म सत्यमेव परं तपः। सत्यमेव परो यज्ञः सत्यमेव परं श्रुतम्॥

सत्यं सुप्तेषु जागर्ति सत्यं च परमं पदम्। सत्येनैव धृता पृथ्वी सत्ये सर्व प्रतिष्ठितिम्॥

तपो यज्ञश्च पुण्यं च देवर्षिपितृपूजने। आपो विद्या च ते सर्वे सर्व सत्ये प्रतिष्ठतम्॥

सत्यं यज्ञस्तपो दानं मन्त्रा देवी सरस्वती। ब्रह्मचर्य तथा सत्यमोंकारः सत्यमेव च॥

सत्येन वायुरभ्येति सत्येन तपते रविः। सत्येनाग्निर्दहति स्वर्गः सत्येन तिष्ठति॥

पालनं सर्ववेदानां सर्वतीर्थावगाहनम्। सत्येन वहते लोके सर्वमाप्नोत्यसंशयम्॥

अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्। लक्षाणि क्रतवष्चैव सत्यमेव विषिश्यते॥

सत्येन देवाः पितरो, मानवोरगराक्षसाः। प्रीयन्ते सत्यतः सर्वे लोकाश्च सचराचरा॥

सत्यमाहुः परं धर्म सत्यमाहु परं पदम्। सत्यमाहुः परं ब्रह्म तस्मात्सत्यं सदा

॥ सत्य वचन ॥

1. मोक्ष मार्ग के अलावा मनुष्य जिस रास्ते पर जाता है, वह सिर्फ दुःख ही देता है।
2. जो वीरान एवं दुर्गम स्थानों में वृक्ष लगाता है, वह अपनी बीती तथा आने वाली सम्पूर्ण पीढ़ियों को तार देता है। इसलिए वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए।

अतीतानागतान् सर्वान् पितृवंषांस्तु तारयेत्। कान्तारे वृक्षरोपी यस्तस्माद् वृक्षांस्तु रोपयेत्॥

3. जो कुत्तों और गौओं को अन्न अर्थात् बलि न देकर स्वयं भोजन कर लेते है। वे नरक में गिरते हैं।

जिस प्रकार राजा के सिपाही आगे-आगे चलते है, राजा पीछे-पीछे चलता है। ठीक उसी प्रकार यमराज के सिपाही कुत्ते और कौएँ यमराज के आगे-आगे चलते है, और यमराज उनके पीछे-पीछे चलते हैं। कुत्ते और कौएँ को मारे नहीं बल्कि उन्हें अन्न अर्थात् बलि दे। ऐसे मनुष्य कभी भी यमराज को नहीं देखते और स्वर्ग में जाते हैं। इसलिए प्रतिदिन अन्न देनी चाहिए।

द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ यममार्गानुरोधकौ। यौ स्तस्ताभ्यां प्रयच्छामि तौ गृहीणतामिमं बलिम्॥

ऐन्द्रवारूणवायव्या याम्या नैऋत्यकास्तथा। वायसाः पुण्यकर्माणस्ते प्रगृहणन्तु मे बलिम्॥

॥ जीवन अमूल्य है ॥

कीट - पतंगे, वृक्ष, पक्षी, मनुष्य,ऋषि, देवता, भगवान ये जीवन के क्रम है। कर्म अच्छे होने पर वह आगे की तरफ बढ़ता है। तथा कर्म अच्छे न होने पर वह पीछे की तरफ लौटता जाता है। मनुष्य का जन्म हमें कीट - पतंगे, वृक्ष और पशु जन्म की मुक्ति के बाद मिला हैं यदि मनुष्य जन्म पाकर भी अच्छे कर्म नहीं किया जाता है तो वह पीछे के जन्म लौटकर पशु, पक्षी, आदि बनता है यदि मनुष्य अच्छे कर्म करता है तो आगे के जन्म ऋषि, देवता, भगवान बनता है। यह क्रम लगातार कर्म अनुसार चलता रहता है।

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

देवता भी मनुष्य जन्म की ही मांग करते है क्योंकि मनुष्य जन्म पाकर प्रभु का नाम लिया जा सकता है। कई ऐसे भी देवता होंगे जिनसे गलती हुई होगी और अपने पिछले जन्म में लौटे होंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि कुछ ऋषि, साधु भी देवता ही है। मनुष्य को चाहिए कि अच्छे कर्म करे। पाप या पुण्य के चक्कर में न पड़े। पाप किया तो कुछ समय के लिए नर्क, पुण्य किया तो कुछ समय के लिए स्वर्ग। मनुष्य को वह कर्म करना चाहिए जो पाप व पुण्य से परे हो। जो उसकी आत्मा कहे वह कर्म करें।

आप एक अच्छे गुरू के पास जाये क्योंकि वह भी भगवान ही है। और यह जानने की कोशिश करें कि परमात्मा कौन है ? सत्य क्या है ? इसी कर्म के लिए आप भारतवर्ष में जन्म लिए हैं।

मैं यह ॥ शिवभक्त महापुराण - भोग और मोक्ष प्रदाता ... ॥ अपने से नहीं लिख रहा हूँ। बल्कि प्रभु का आदेश है और आदेश का पालन करना प्रभु की बात को मानना है। मेरी कलम उन्होनें पकड़ रखी है। यह ॥ शिवभक्त महापुराण ॥ शिवभक्तों की सेवा के लिए समर्पित है। यह क्रम चल रहा है, और प्रभु की कृपा से चलता रहेगा। जो भी आदेश मिलता रहेगा वह इस ॥ शिवभक्त महापुराण ॥ में जुड़ता रहेगा।

प्रत्येक प्राणी का जीवन अमूल्य है। अपने जीवन की सार्थकता को समझे, अपनी आत्मा को पहचाने और लक्ष्य की ओर आगे बढ़े।

एक दिन में एक बार भी 'शिव' या 'शिवभक्त ' का नाम लेने से इतना पुण्य मिलता है जितना कि वह एक दिन में पाप भी नहीं कर सकता। हमेशा शिव का नाम लेते रहे। प्रभु भी आपके साथ रहें। आपके सुझाव आमंत्रित हैं.......

शिवभक्त संतोष कुमार गुप्ता

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ आरती शिवजी की ॥

तेरी आरती उतारी , हे भोले भंडारी।

तेरी महिमा है प्यारी, हे भोले भंडारी॥ 2

पेड़ से लेकर ब्रह्मा, विष्णु करते तेरी पूजा।

जन्म-जन्म में तुँझी को पाँऊ, हो न कोई दूजा॥

हे डमरूधारी, हे त्रिशूलधारी, हे गंगेधारी करते बैल सवारी।

तेरी आरती उतारी, हे भोले भंडारी।

तेरी महिमा है प्यारी, हे भोले भंडारी॥

कण-कण, पात-पात को रचता और उसी में बसता।

शिवभक्त कहें तेरी जुबां को, अमृतरस छलकता ॥

हे भस्मधारी, हे जटाधारी, हे चंदाधारी करते बैल सवारी।

तेरी आरती उतारी, हे भोले भंडारी।

तेरी महिमा है प्यारी, हे भोले भंडारी॥

काम, क्रोध, मोह छोड़ दे बन्दे, नहीं है कोई दूजा।

देश-विदेश से भारत आते, करने शिव की पूजा॥ 2

हे बैल सवारी,हे त्रिशूलधारी, हे नीलकंठधारी, काशी के दुलारी।

तेरी आरती उतारी, हे भोले भंडारी।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

तेरी महिमा है प्यारी हे भोले भंडारी ॥

जो इस आरती को है गाता, शिवलोक है पाता ।

सभी धर्म सब एक है, ऐसी शिवभक्त वाणी ॥ 2

हे विषधारी, हे सर्पधारी, हे रूद्राक्षधारी करते बैल सवारी ॥

तेरी आरती उतारी, हे भोले भंडारी ।

तेरी महिमा है प्यारी, हे भोले भंडारी ॥ 3

॥ प्रार्थना ॥

तावकस्त्वद्गुणप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड । कृपानिधे इति ज्ञात्वा भूतनाथ प्रसीद मे ॥

अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानाज्जपपूजादिकं मया । कृतं तदस्तु सफलं कृपया तव शंकर ॥

अहं पापी महानद्य पावनश्च भवान्महान् । इति विज्ञाय गौरीश यदिच्छसि तथा कुरु ॥

वेदैः पुराणैः सिद्धान्तैर्ऋषिभिर्विविधैरपि । न ज्ञातोऽसि महादेव कुतोऽहं त्वां सदाशिव ॥

यथा तथा त्वदीयोऽस्मि सर्वभावैर्महेश्वर । रक्षणीयस्त्वयाहं वै प्रसीद परमेश्वर ॥

॥ खुश रहो ॥

II SHIVBHAKTI PURAN II

Shivbhaktt Mahapuran
A Enjoyment & Salvation Giver ...
Lord God is Old and We must Serve Him